प्यारा लड्डू

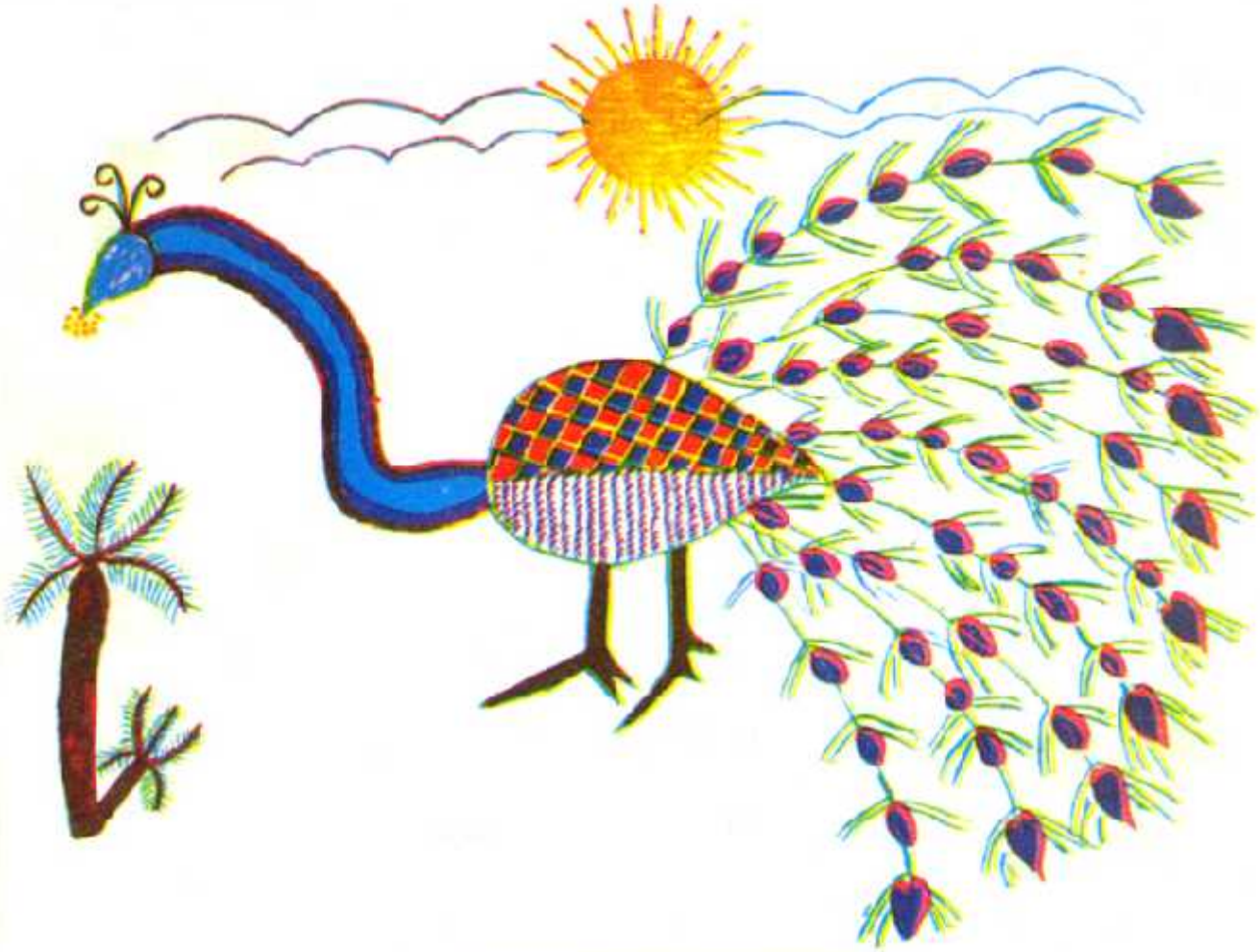

बच्चों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन

रामसींग, दूसरी, सादीपुरा, देवास म प्र.।
चकमक जनवरी, 37 में प्रकाशित

प्यारा लड्डू

चकमक (जुलाई, 85 से दिसम्बर, 88) में प्रकाशित. बच्चों द्वारा लिखी गई कविताओं का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

प्यारा लड्डू

चकमक में प्रकाशित बच्चों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन

© एकलव्य

प्रथम संस्करण: जून 1989
परिवर्द्धित संस्करण: जनवरी 1996
पहला पुनर्मुद्रण: मार्च 1998
दूसरा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2007/ 3000 प्रतियाँ
70 gsm गेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-06-5
मूल्य: 17.00 रुपए

प्रकाशक: एकलव्य
ई 7/453 HIG अरेरा कॉलोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)
फोन: 0755 - 246 3380, फैक्स: 0755 - 246 1703
e-mail: bhopal@eklavya.in सम्पादकीय: books@eklavya.in
www.eklavya.in

आवरण: अनीता इंदरसिंह, आठवीं, गेघनगर, झाबुआ, म.प्र.। चकमक, अगस्त, 87 में प्रकाशित।
पिछला आवरण: स्वाधीन जैन, छह वर्ष, विदिशा, म.प्र.।

मुद्रक: राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन 0755-268 7589

बड़ों की एक बात

यह बात तो अब तक खूब दोहराई गई है कि देश में, ख़ासकर हिन्दी क्षेत्र में बाल साहित्य की दशा बहुत ख़राब है। सवाल है इस स्थिति में बदलाव कैसे लाया जाए? एक तरफ़ टेलीविज़न व वाहियात कॉमिक्सों ने बाज़ार गर्म कर रखा है। दूसरी ओर विदेश के निम्नस्तरीय खिलौनों, किताबों व रचनाओं की बदतरीन नकलें भरी पड़ी हैं। इसका यह मतलब कतई नहीं है कि विदेशों में बच्चों के लिए केवल निम्नस्तरीय साहित्य व चीज़ें ही रची जाती हैं। वास्तव में वहाँ बहुत कुछ ऐसा भी है जिसे सही ढंग से अपने यहाँ इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन देखने में यही आता है कि नकल बार्बी गुड़िया, हीमैन, सुपरमैन व बैटमैन जैसी चीज़ों की ही व्यापक रूप से होती है।

पिछले कई वर्षों से एकलव्य बाल गतिविधियों में संलग्न है। यह काम स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में चल रहा है। स्कूली काम होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से शुरू हुआ था और अब यह विज्ञान के साथ-साथ सामाजिक अध्ययन व प्राथमिक शालाओं तक फैल गया है। इन सब प्रयासों का मुख्य उद्देश्य है एक ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो और जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। इसी काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को घर में या स्कूली समय से बाहर भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, जिनमें अच्छी किताबें एक अहम हिस्सा है। इसी मंशा से पिछले कई वर्षों में एकलव्य संस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में जगह-जगह बाल पुस्तकालय खोले हैं। पिपरिया स्थित शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केन्द्र ने बच्चों के साथ कई नए प्रयोग किए हैं। इन्हीं क्षेत्रों में हर साल लगभग पचास बाल मेले भी आयोजित किए जाते हैं। इन मेलों में बच्चों को ड्राइंग, मिट्टी और कागज़ के खिलौने बनाते, छोटे-छोटे प्रयोग करते और अन्य गतिविधियों में मगन देखा जा सकता है। इन सब प्रयासों से बच्चों में अभिव्यक्ति का जो चेहरा उभरा है उसे बालचिरैया और बालकलम जैसी स्थानीय बाल पत्रिकाओं में देखा जा सकता है। ये पत्रिकाएँ इन्हीं गतिविधियों के दौरान जन्मीं। इन पत्रिकाओं में आसपास के क्षेत्र के बच्चों की रचनाएँ व चित्र नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं।

व्यापक क्षेत्र में बाल साहित्य को फैलाने व आगे लाने का काम चकमक मासिक पत्रिका से होता है। 1985 से लगातार निकलने वाली यह पत्रिका मध्यप्रदेश के सभी माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में जाती है। होशंगाबाद विज्ञान के क्षेत्र वाले चौदह ज़िलों में बच्चों तक यह हाथों-हाथ पहुँचाई जाती है। चकमक की डाक में हर माह औसतन दो सौ रचनाएँ सीधे बच्चों से प्राप्त होती हैं।

लगभग पाँच वर्षों के इस प्रयास के बाद हमने सोचा कि यह सारी बात देश के अन्य प्रांतों तक क्यों न पहुँचाई जाए। आमतौर पर तो बड़े ही बच्चों के लिए लिखते हैं लेकिन चकमक, बालचिरैया और बालकलम में प्रकाशित होने वाली बच्चों की रचनाएँ हर मायने में उनसे इक्कीस ही हैं। इन्हीं रचनाओं से हमने ये दो संकलन तैयार किए हैं - एक कविताओं का और एक कहानियों का। लगभग सभी रचनाओं के चित्र भी बच्चों ने ही बनाए हैं।

हम यह मानते हैं कि देश के हर बच्चे की अपनी एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है, शैली है - चाहे वह गाँव में रहता हो या फिर कस्बे या शहर में - अगर मौका दिया जाए तो वह स्वाभाविक रूप से अपनी भाषा या तरीके से उभर आएगी।

यहाँ चकमक में छपी एक कविता के कुछ अंशों का उल्लेख करना मौजूँ होगा - यह कविता एक शिक्षिका शुक्ला चौधरी की है -

वे मुझे रोकते हैं
धूल में नहाने को
जैसे चिड़िया नहाती है,
वे हँसने भी नहीं देते
जी खोलकर
जैसे दुनिया के सभी
फूल हँसते हैं।
मुझे समझ में नहीं आता
वे क्या, पढ़ाते हैं, उसमें
न नदी होती है न पहाड़
न गीत गाते झरने
मेरी नन्हीं सी आँखों में
जो बसा है जंगल, उसमें
किसी भी पेड़ का
एक पत्ता छूकर नहीं देखा है
मेरे शिक्षक ने।
मैं चाहती तो हूँ
पढ़ूँ पर
शिक्षक मुझे वैसा नहीं पढ़ाते
जैसा मैं चाहती हूँ।

लेकिन स्कूली भाषा, भय, बड़ों की डाँट-डपट व गलत-सही का सिलसिला जब तक हावी रहेगा, यह नन्हीं अभिव्यक्ति मरती रहेगी, और इसकी जगह लेगी एक विकृत संस्कृति जो न उस बच्चे की है, न उस परिवेश की। और उसमें से उभरेगा एक नीरस व उजड्ड वयस्क जिसको हम अंततः मिसगाइडेड यूथ या भटके हुए युवा का नाम देकर धिक्कारते हैं।

इन संकलनों की सभी रचनाएँ चकमक में जुलाई, 85 से दिसम्बर, 88 के बीच समय-समय पर प्रकाशित हुई हैं। इनमें से कई रचनाएँ किशोर भारती के भगतसिंह पुस्तकालय व सांस्कृतिक केन्द्र की बालसभा व अन्य गतिविधियों में तैयार की गई और फिर चकमक में छापी गईं। रचनाकार व चित्रकार के नाम के साथ उनकी उम्र या कक्षा का उल्लेख है। यह उम्र या कक्षा रचना लिखते समय या चित्र बनाते समय की है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति की एक देन नकल है। और यह केवल परीक्षा या स्कूल तक सीमित नहीं रहती, बल्कि स्कूल के बाहर की ज़िंदगी में भी उभरने लगती है। चकमक के लिए आने वाली रचनाओं में कभी-कभी नकल की हुई कविताएँ या कहानियाँ आ जाती हैं। इस संकलन में शामिल रचनाएँ मौलिक हों, यह प्रयास हमने किया है।

अगले संकलनों में हम चकमक से वे रचनाएँ चुनेंगे जो बड़ों ने बच्चों के लिए लिखी हैं। लेकिन पहली पारी उन बच्चों की जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में हम बड़ों के दिमागों को ठिकाने लगाने का काम किया है।

एकलव्य ग्रुप
जून, 1989

चिड़िया

ऋतु तिवारी

एक चिड़िया के बच्चे दो,
फुदक-फुदककर खेलें वो।

मेरे घर के आँगन पर,
खिड़की और दरवाज़े पर।

मैं चाहूँ लूँ उन्हें पकड़,
लेकिन ये उड़ जाते फुर्र।

प्रवीन सिंह

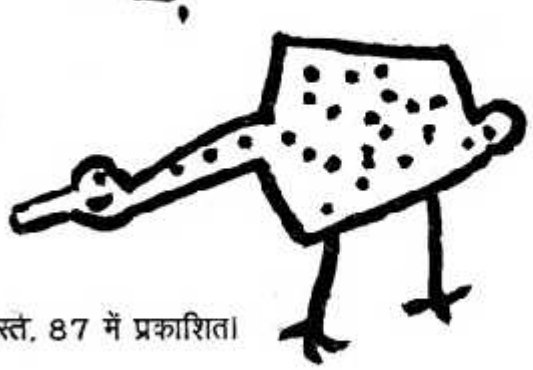

ऋतु तिवारी, तीसरी, मंडला म.प्र.।
प्रवीन सिंह, छठवीं। कविता एवं चित्र चकमक अगस्त, 87 में प्रकाशित।

मन तरसे

गोपाल पटेल

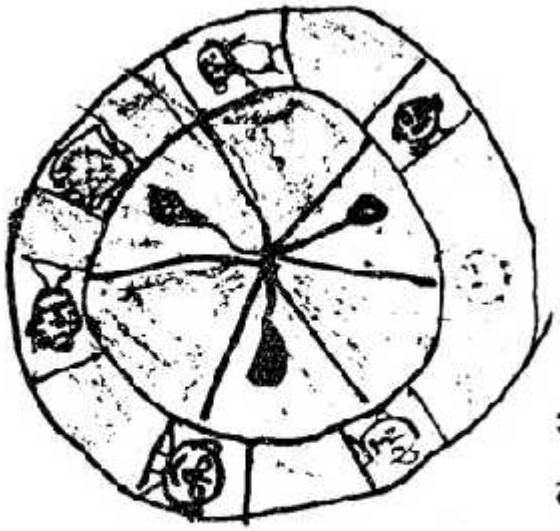

मन तरसे भाई मन तरसे
बाल मेला जाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
चित्र बनाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
कठपुतली बनाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
खेल खेलने को मन तरसे

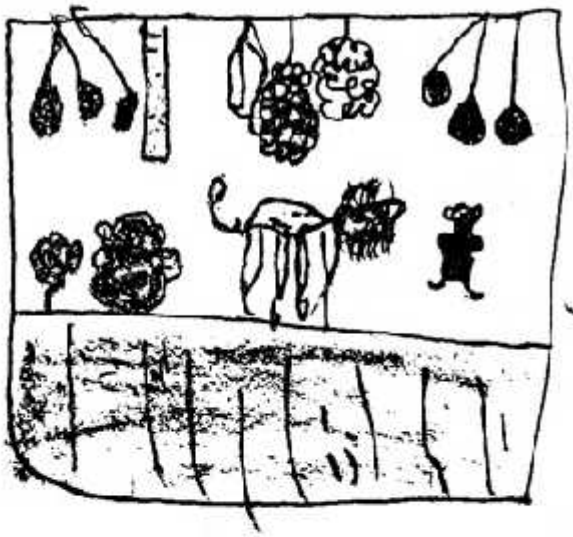

भारती चौहान

गोपाल पटेल, टिगारिया छोटा, देवास, म. प्र.। चकमक जुलाई, 88 एवं बालकलम में प्रकाशिता भारती चौहान, तीसरी, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.।

सौरभ जोशी

पुरूषोत्तम सराठे, दसवी, इटारसी म.प्र.। चकमक नवम्बर, 85 में प्रकाशित।
सौरभ जोशी, पांच वर्ष, भोपाल, म.प्र.।

प्यारा लड्डू

पुरुषोत्तम सराठे

गोल-मोल है सबसे न्यारा
लड्डू प्यारा, लड्डू प्यारा।

मन कहता उसको खा जाऊँ,
किंतु कहाँ से पैसा पाऊँ?

मीठा इतना क्यों कर होता,
क्यों वह सबका धीरज खोता।

देखो जिसे वही ललचाता,
कोई उससे नहीं अघाता।

लड्डू लेकर चटपट खाना,
है यह कैसा काम सुहाना।

हलवाई जो इसे बनाता,
क्यों न सभी को मुफ्त खिलाता।

यही मिठाई का है राजा
खाता वही बजाता बाजा।

हरदम है वह तान उड़ाता,
एक बार जो है पा जाता।

लड्डू की है किस्मत भारी,
जिसे चाहते हैं नर-नारी।

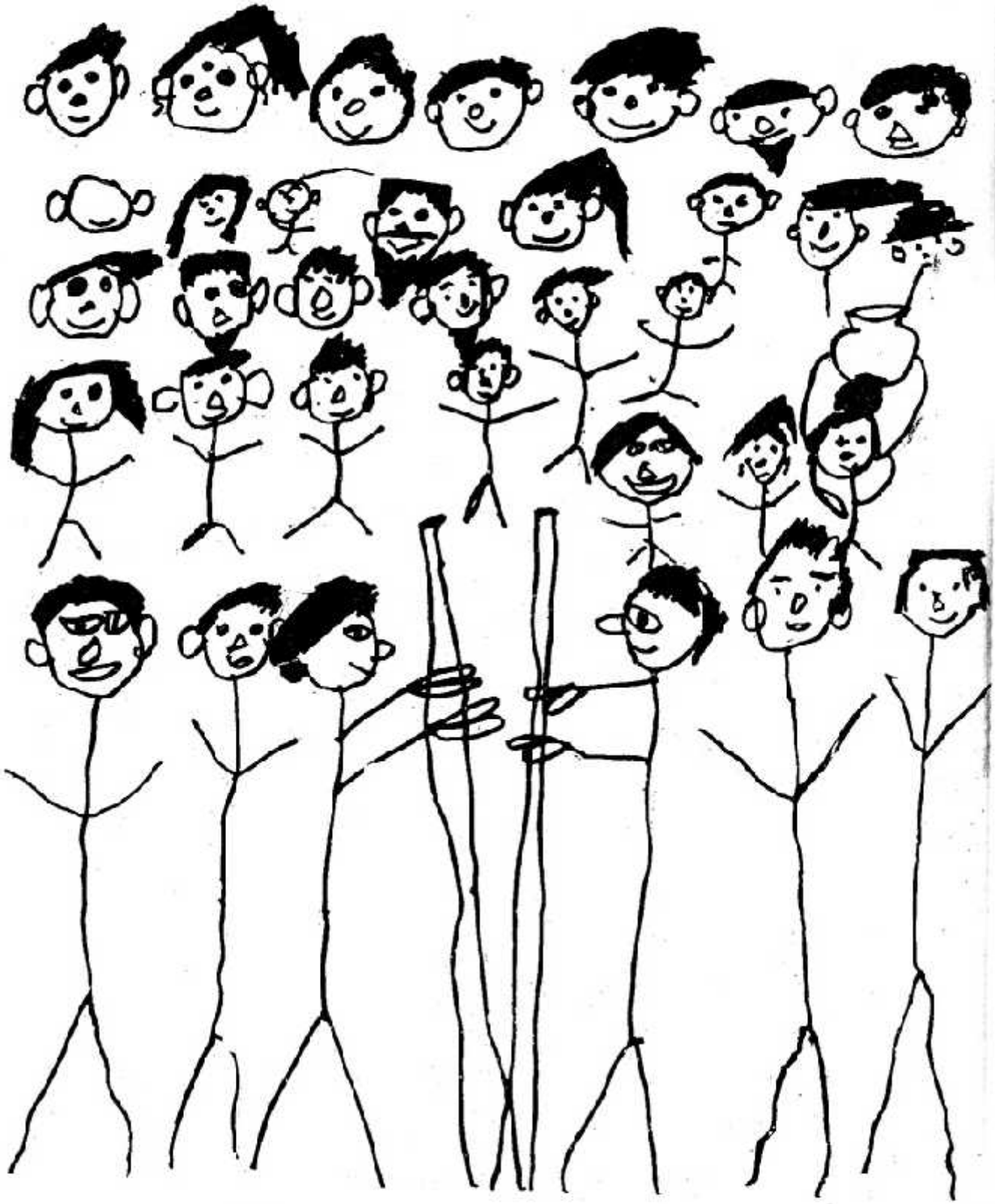

ऋचा विवेक

हरनाम सिंह ठाकुर, छठवीं, रानी पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.। बालचिरैया, अक्टूबर, 87 एवं चकमक, नवम्बर, 88 में प्रकाशित। ऋचा विवेक, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.।

गाँव में चले लट्ठ

हरनाम सिंह ठाकुर

सदा हमारे गाँव में होती नहीं लड़ाई
कभी-कभार जो होत है हल्ला, सबको दिया सुनाय

कुन्ना मुन्ना दो भइया थे, एक दिन उनमें ठनी लड़ाई
देखन को सब दौड़े, छोड़-छोड़कर अपनी पढ़ाई

कुन्ना बोलो मुन्ना कान खोलकर सुन ले आज
बंधिया फोड़ी खेत की तूने, तेरो तो मोड़ा मर जाय

गुस्सा आ गई मुन्ना को उसने लठिया लई निकार
गाली गुप्ता हो रही, मुन्ना करन लगे तकरार

हल्ला सुन के मुकद्दम आये और आये गाँव कुटवार
सयाने बड़े बहुत से आये, और आये पंच मुख्तयार

कुन्ना बोलो सब पंचों से, जा अर्जी सुन लो महाराज
इसने बंधिया फोड़ी खेत की, इसका निर्णय दियो कराय

बुलवाए फेर मुन्ना को और पंचों ने दिया हुकम सुनाय
माफी मंग ले तू कुन्ना से, तेरी खता माफ हो जाय

अभिमानी मुन्ना फिर गरजो, और पंचों की मानी नाय
सब पंचों ने किया फैसला, जात से बन्द दियो कराय

जैसो झगड़ा हुआ गाँव में, मैंने तुमको दिया बताय
जे कुछ गल्ती हुई है इसमें, उसको देना माफ कराय

एक नन्ही बच्ची

अनुराग अग्रवाल

एक नन्हीं-मुन्नी बच्ची
खेल रही थी धूल में
हाथ पाँव भूरे हो गए उसके
फिर भी खेलती रही धूल में

श्वेता शर्मा

अनुराग अग्रवाल, आठवीं, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.। चकमक अक्टूबर, 85 में प्रकाशित।
श्वेता शर्मा, छठवीं, भोपाल।

एक नन्हीं मुन्नी बच्ची
नहा रही थी नल में
ठण्ड लग रही थी उसको
फटे हुए कपड़े में

एक नन्ही मुन्नी बच्ची
जा रही थी स्कूल
हाथ में भारी बस्ता लिए
दुख रहे थे हाथ फिर भी
टांगे हुए थे बस्ता
एक नन्ही-मुन्नी बच्ची

बादल आए

अंजली टिकलकर

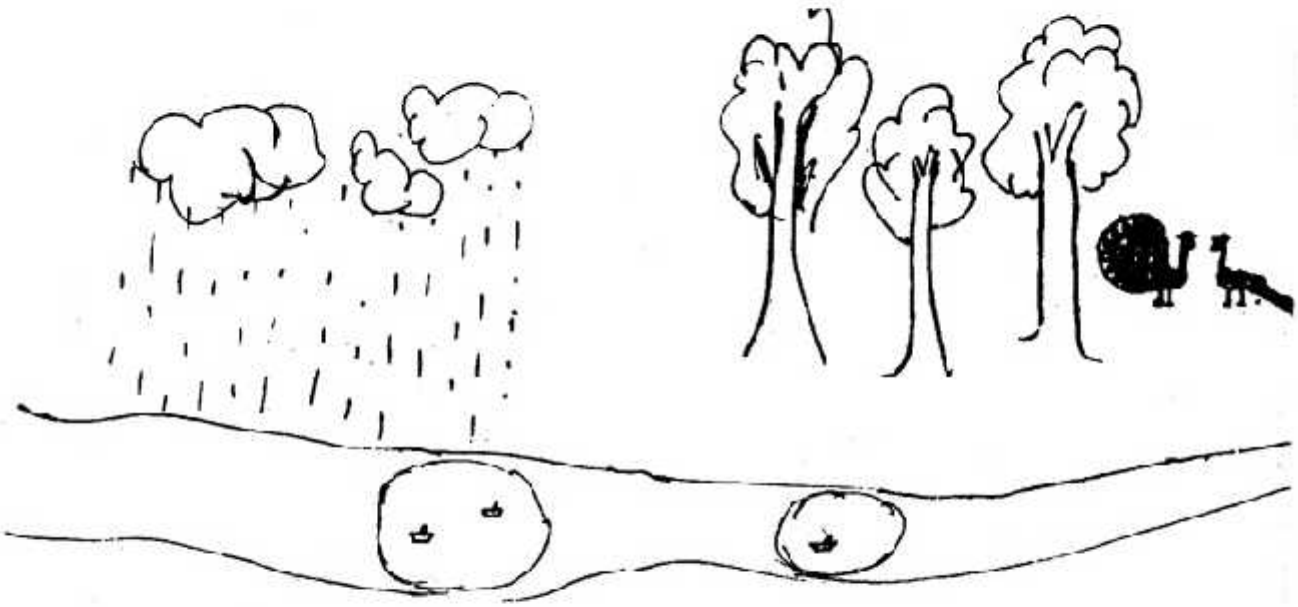

टुलटुल विश्वास

उमड़-घुमड़कर बादल आए
काले-काले प्यारे-प्यारे
पानी इतना सारा लाए
उमड़-घुमड़कर बादल आए

देखो मोर पंख फैलाकर
ठुमक-ठुमककर नाचें गाएँ
उमड़-घुमड़कर बादल आए

हवा चल रही सर..सर.. सर
पत्ते अपना गान सुनाएँ
उमड़-घुमड़कर बादल आए

अंजली टिकलकर, दसवीं, हरदा, म.प्र.।
टुलटुल विश्वास, दसवीं, भोपाल, म.प्र.। कविता व चित्र चकमक सितम्बर, 85 में प्रकाशित।

तोता हूँ जी तोता

रणवीरसिंह राजपूत

तोता हूँ जी तोता हूँ
हरी डाल पर बैठा हूँ

लाल मेरी चोंच है
चंचल मेरी चाल है!

ताज़ा फल मैं खाता हूँ
ठण्डा पानी पीता हूँ!

जब माली का पोरा देखा
फ़ट से मैं उड़ जाता हूँ।

पम्मी सोनी

रणवीरसिंह राजपूत, चौथी, रोहना डान, छिंदवाड़ा, म.प्र.। यकमक जुलाई, 87 में प्रकाशित।
पम्मी सोनी, पाँचवीं, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.।

राखी रुकु

फूलों की क्यारियाँ

अपर्णा मेहरा

छोटी-छोटी क्यारियाँ
इनमें खिले नन्हे फूल,
फूलों को हमें कभी नहीं मारना चाहिए,
इन पर हमें दया रखना चाहिए।

ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुन्दरता है।
छोटी-छोटी क्यारियाँ,
इनमें खिले फूल
अगर इनके पास छोटे बच्चे रख दो
तो ये कितने सुन्दर लगते हैं।

ये हमेशा मुस्कराते हैं,
यही इनकी सुन्दरता है।
छोटी-छोटी क्यारियाँ,
इनमें खिले नन्हे फूल।

देखो, पानी में कमल के फूल,
पानी में तैरती बत्तखें,
कितनी सुन्दर दिखती हैं
छोटी-छोटी क्यारियाँ, इनमें खिले नन्हे फूल।

अपर्णा मेहरा, आठवीं, भोपाल, म.प्र.। चकमक अक्टूबर, 85 में प्रकाशित।
राखी रकु, दूसरी, कुम्हारगड्डा, धार, म.प्र.।

अपने दोस्त

दुर्गा रावल

दोस्त हैं अपने भूल भूलक्कड़,
बात उनकी सारी गड़बड़।

पैदल हों तो रास्ता भूलें,
बस में जाएँ तो बस्ता भूलें।

रेल में सोते-सोते जागें,
पहुँचें चार स्टेशन आगे।

धोती है तो कुरता गायब,
मोजा है तो जूता गायब।

प्याली में चम्चा उलटा,
फेर रहे हैं कंघा उलटा।

दुर्गा रावल, छठवीं, धार, न. प्र.। चकमक अगस्त, 86 में प्रकाशित।
मीना कुमारी, छठवीं, नामली, रतलाम, म. प्र.।

मीना कुमारी

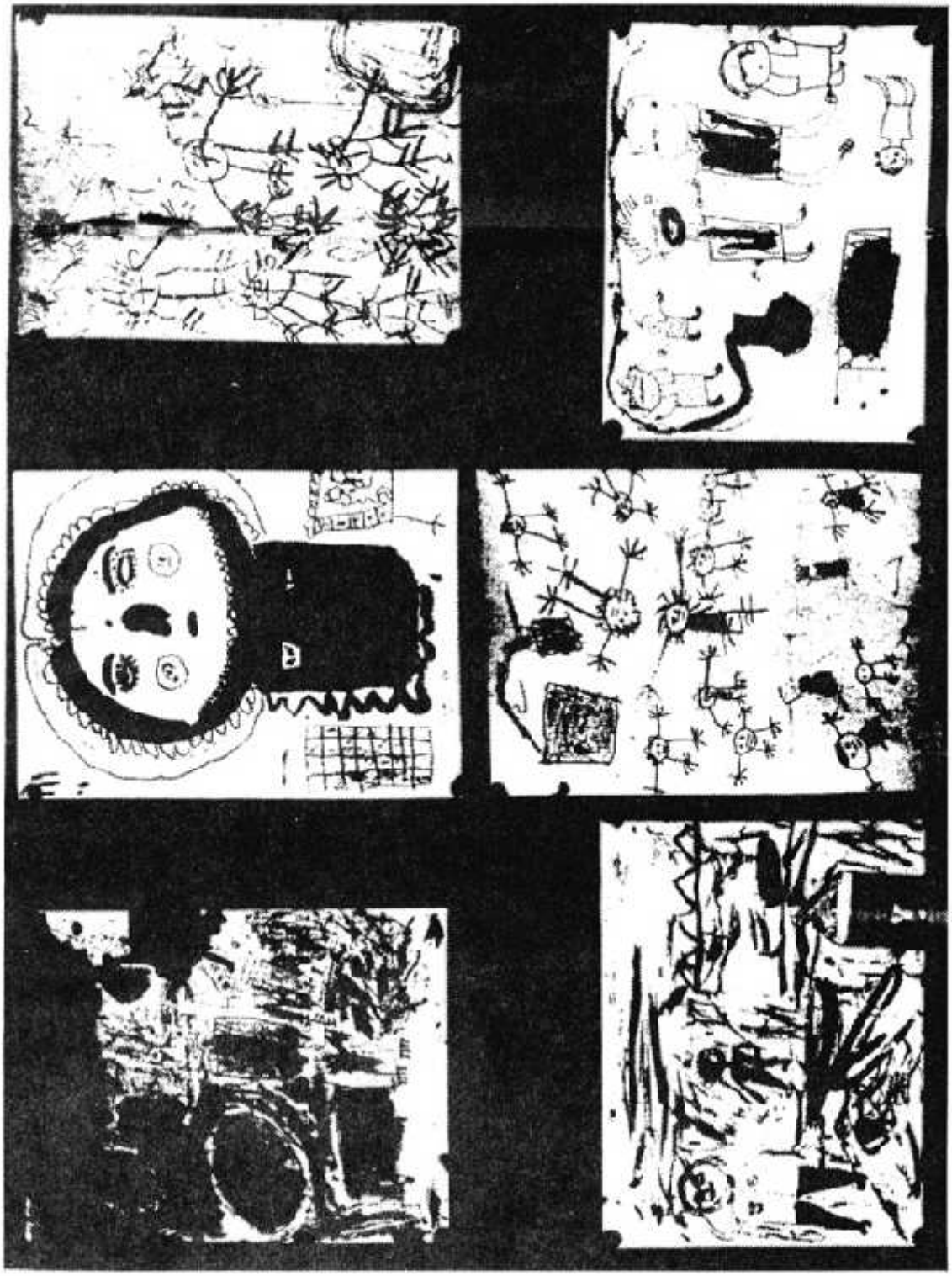

शहनाज़, नवमीं, एक गैस पीड़ित बस्ती की निवासी, भोपाल, म.प्र.। चकमक सितम्बर, 85 में प्रकाशित। गैस पीड़ित बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी का एक फोटो।

काली अंधेरी रात में

शहनाज़

उस दिन की काली अंधेरी रात में
किसी ने मेरे कानों में आकर कहा
उठो ए रहमदिल वालो
ऊपर नीचे सब जगह ज़हरीली गैस फैल रही है
हर इन्सान की आँख में चुभ रही है
बागों-बगीचों की क्या?
हमसे हमको जुदा कर रही है।
उस दिन आधी रात को हमने यह देख लिया।
दिल शीशे की तरह टूट गया
हर इन्सान को हवा की तरह भागते हमने
देख लिया।
हर इन्सान को पागल की तरह बहकते
हमने देख लिया।
फिर पल दो पल में जाने क्या हो गया।
देखते ही देखते महल शमशान बन गया।
और जाने क्या हुआ
सारा चमन उजड़ गया।
हर पेड़ की हर कली, फूल का रंग बदल गया
हर पत्ता टूट गया, सारे जहाँ में सन्नाटा छा गया।
हर इन्सान, इन्सान को भूल गया
उस दिन की काली अंधेरी रात में।

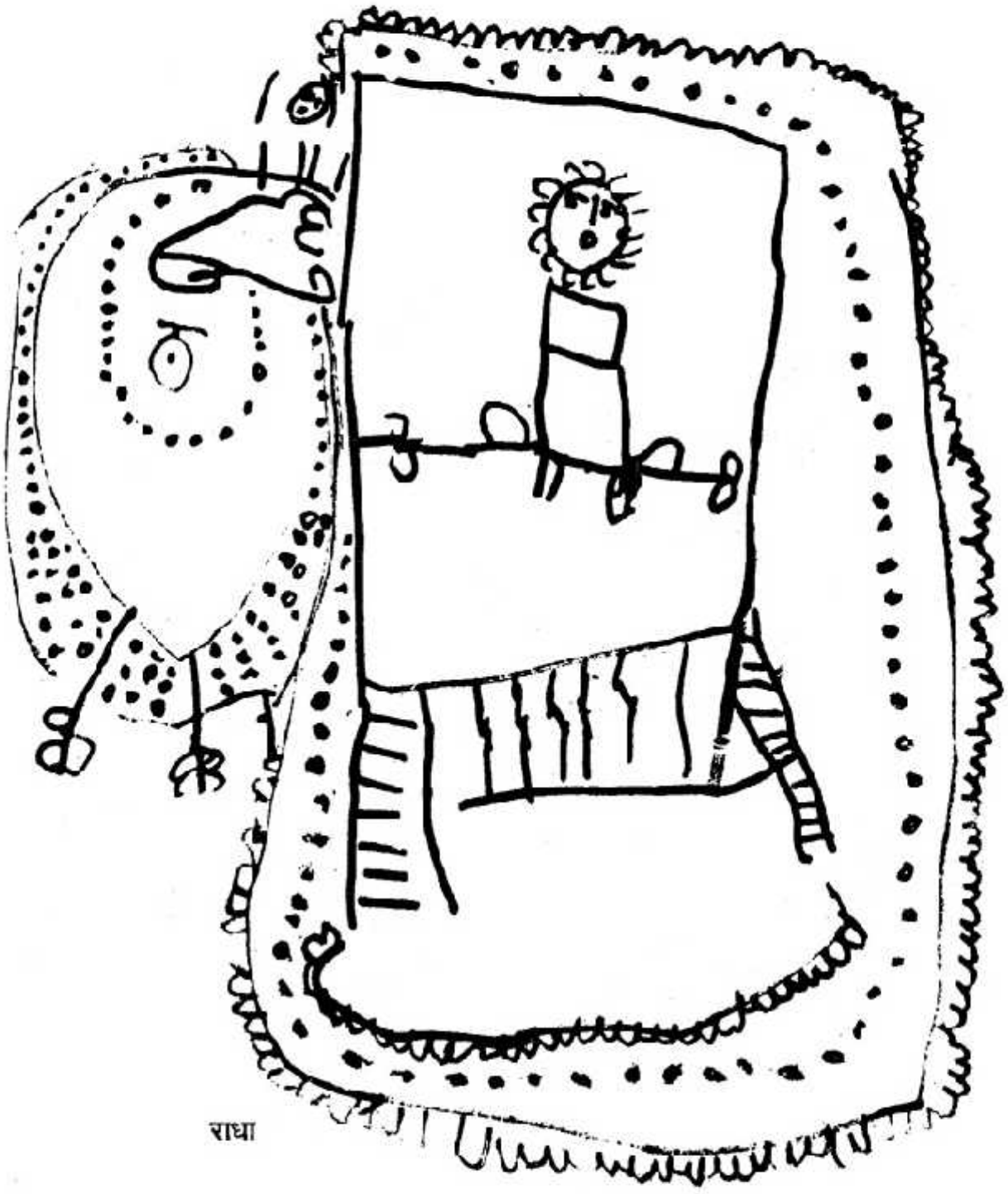

वर्षा जोशी, उज्जैन, म.प्र.। चकमक नवम्बर, 85 में प्रकाशित।
राधा, तीसरी, पिपरिया, म.प्र.।

बिजली रानी

वर्षा जोशी

बिजली रानी, बिजली रानी,
हाय तुम्हारा क्या कहना।

सूरज, चाँद हमारे भैया,
तुम हो सबकी बहना।

बिजली रानी न्यारी है,
जगवालों की प्यारी है।

चिमनी में हम पढ़ते भाई,
यह दुखड़ा भी सुन लो भाई।

बार-बार अब बिजली रानी,
रूठ-रूठ जाती है।

कभी देर तक जलती रहती,
या घण्टों गुल हो जाती है।

बिजली रानी, बिजली रानी,
बात हमारी सुनना।

अंधियारे को दूर भगाकर,
उजियारा ही करना।

सपने की बात

आरती सूर्यवंशी

हकीकत मेरी पाठशाला की।
बात है रात के सपने की॥

एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डण्डा, आँख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब गणित वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
गुणा करो और भाग करो, सिर दर्द बहाना बताती है।

एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डण्डा, आँख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब भूगोल वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
कोई यहाँ बसा, कोई वहाँ बसा, दुनिया की सैर कराती है।

एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डण्डा, आँख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब इतिहास वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
कोई यहाँ मरा, कोई वहाँ गड़ा, मरघट की सैर कराती है॥

एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डण्डा, आँख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥
जब इंग्लिश वाली आती है तो क्या-क्या पढ़ाकर जाती है।
व्हाट की जगह चाट कहा तो चट चाँटा लगाती है॥

एक दिन सपने में बहन जी को आते देख लिया।
हाथ में डण्डा, आँख पे ऐनक, नाक चढ़ाते देख लिया॥

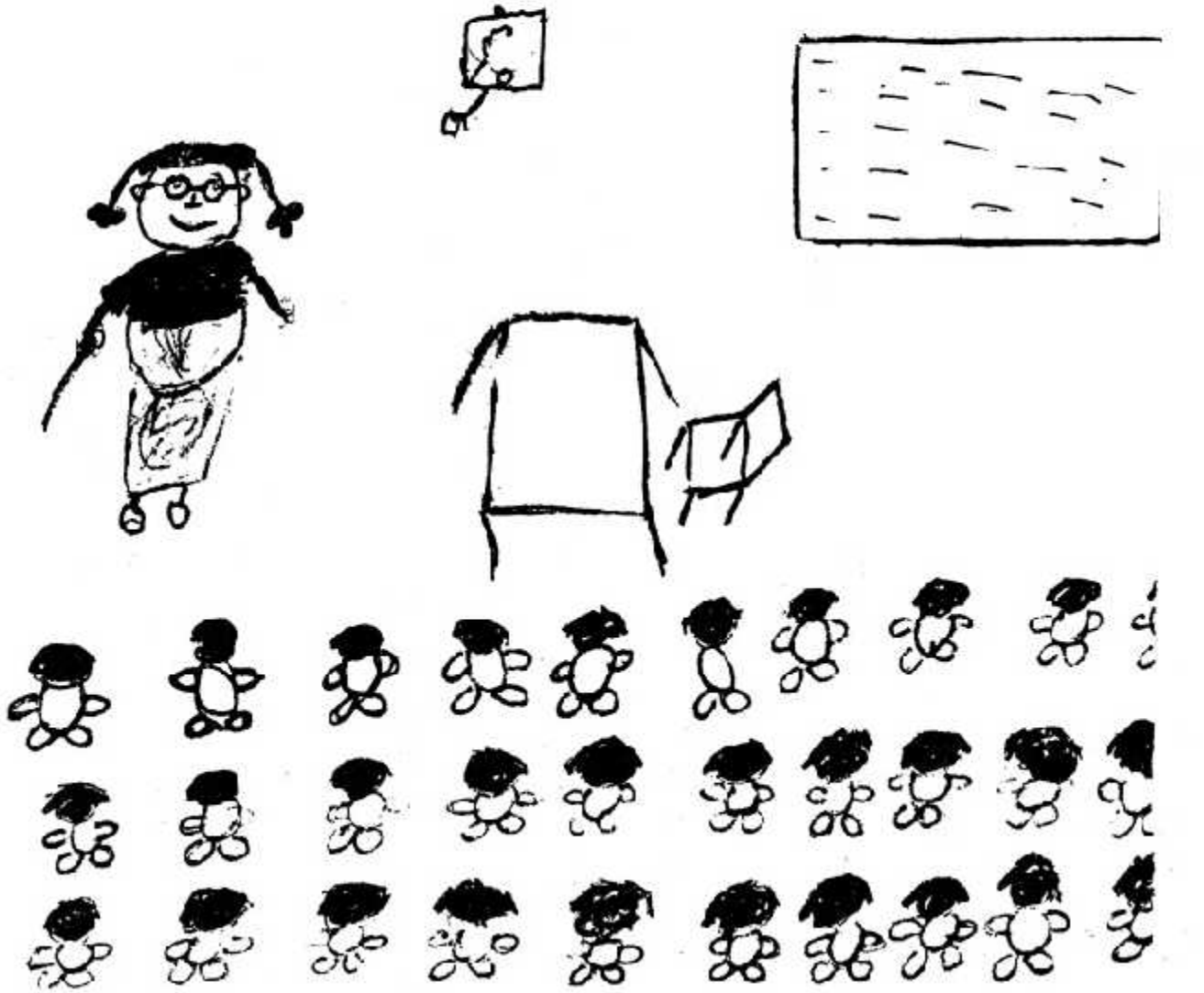

फिरोज़ खान

आरती चूर्यवंशी, छठवीं, सेमरी हरचंद, होशंगाबाद, म.प्र. । चकमक मार्च, 86 में प्रकाशित। फिरोज़ खान, पाँचवीं, पिपरिया, म.प्र.।

परीक्षा आई

अभिलाषा सिंगोरिया

परीक्षा आई, परीक्षा आई
लेकर माथा पच्ची
कॉपी में आँखें गड़ाए
बैठे रहते हरदम
कोई लगा रहा आई एम पी
कोई याद कर रहा पाठ
परीक्षा आई, परीक्षा आई
खेलने का समय नहीं
काम को फुर्सत नहीं
बने रहते दिन भर रटन तोता
करके खाना पीना हराम
बस पढ़ाई ही पढ़ाई!

अभिलाषा सिंगोरिया, सातवीं, कुक्षी, धार, म.प्र.। चकमक जून, 88 में प्रकाशित।
चित्र: विप्लव, चौथी, पिपरिया, म.प्र.।

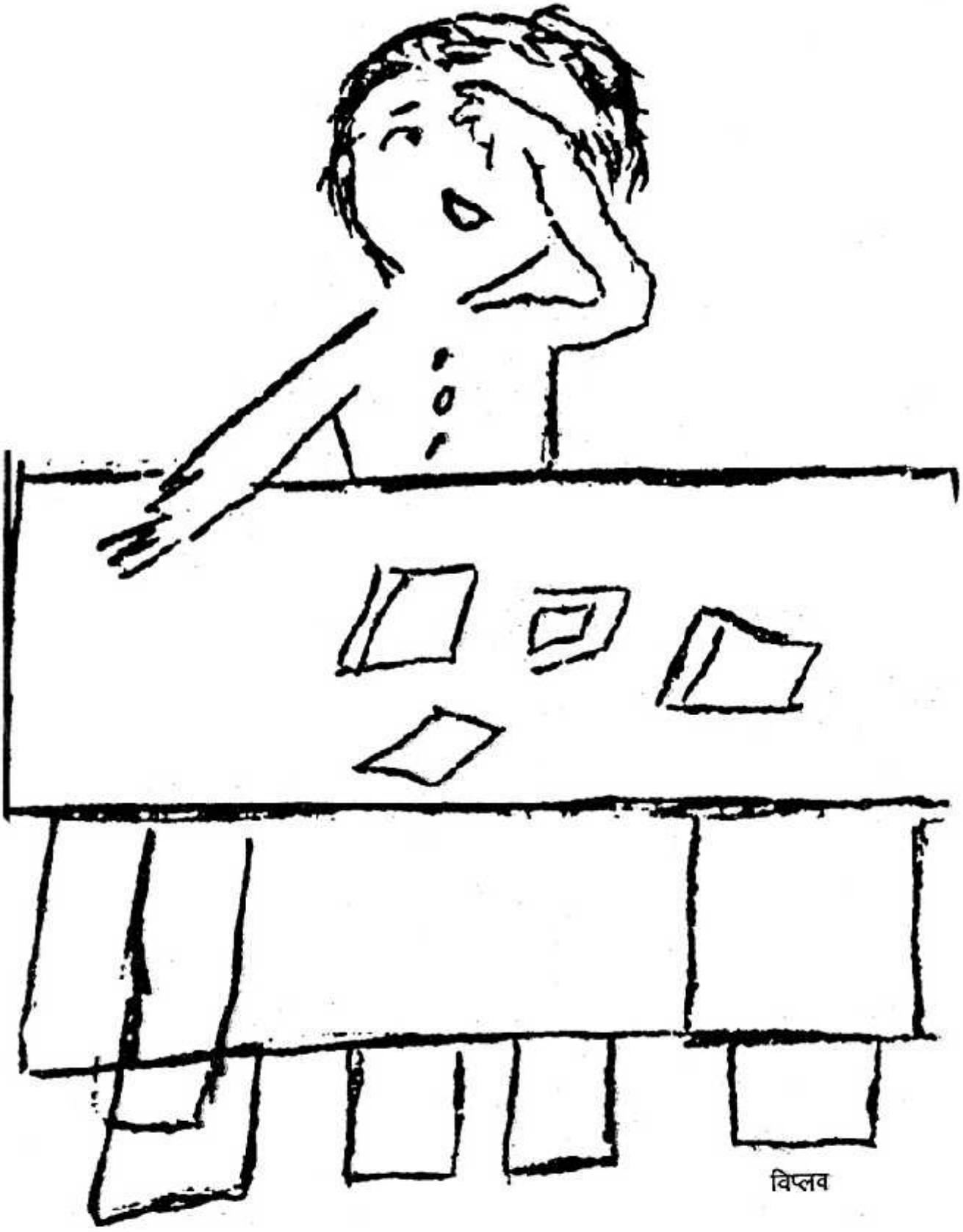

विप्लव

चिड़िया रानी

प्रेरणा उपाध्याय

ची चीं रानी, चीं चीं रानी
तेरी-मेरी अजब कहानी
तू भी छोटी, मैं भी छोटी
तू भोली तो मैं भी भोली
एक चोंच में कितने दाने
मटक-मटक कर पीती पानी
क्यों करती इतनी नादानी
दबे पाँव जो मैं आती हूँ
चुपके से तू क्यों उड़ जाती
कैसी ये बातें अनजानी
चीं चीं रानी, चीं चीं रानी
छोटा तन पर कितनी सयानी

प्रेरणा उपाध्याय, ग्यारहवीं, साँवेर, इंदौर, म.प्र.। चकमक दिसम्बर, ४४ में प्रकाशित।
विप्लव, चौथी, पिपरिया, म.प्र.।

विप्लव

मेरा बंदर

तरुण कुमार सिंह

मेरा बंदर मस्त कलंदर,
पल में बाहर पल में अंदर।

मेरा घोड़ा बड़ा निगोड़ा।
कभी न पीता पानी थोड़ा।

मेरी बिल्ली बड़ी चिबल्ली,
पलक झपकते पहुँची दिल्ली।

मेरा बाजा करे तकाज़ा,
पढ़ लिख लो तो बनोगे राजा।

मेरा तोता पंख भिगोता,
राम-राम रट के खुश होता।

मेरा हाथी सबका साथी,
लेकिन उसकी सूंड़ डराती।

मेरी गुड़िया जादू की पुड़िया,
रूप बदल बन जाती बुढ़िया।

मेरा टामी रंग बादामी,
पाँव उठाकर करे सलामी।

तरुण कुमार सिंह, अतरैला, रीवा, म.प्र.। चकमक जनवरी, 86 में प्रकाशित।
मोहन लाल पाली, पिपरिया, म.प्र.। बालचिरैया में प्रकाशित।

मोहन लाल पाली

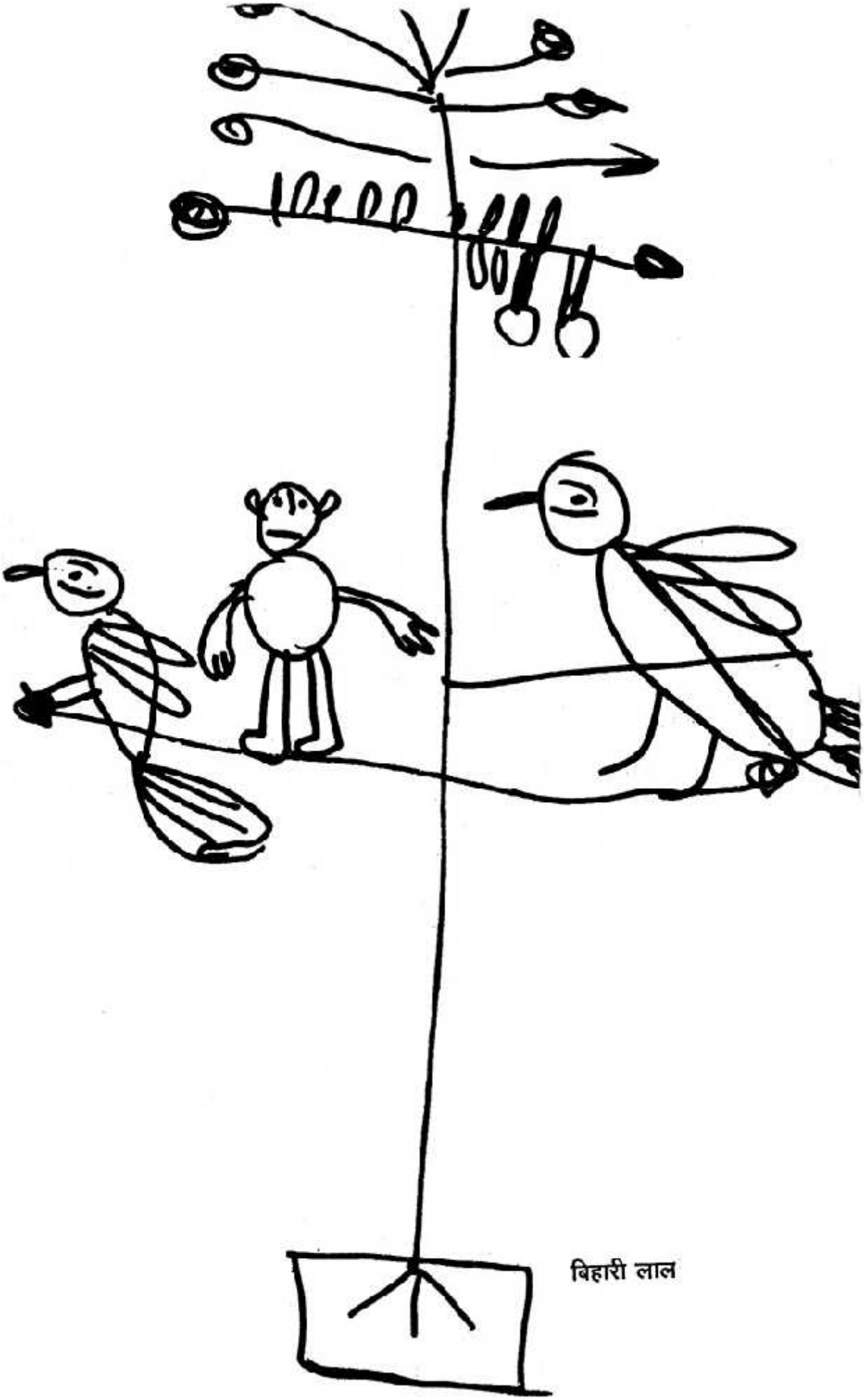

बिहारी लाल

कोयल री कोयल

जोगेंद्र सिंह सोलंकी

कोयल री कोयल, गा थोड़ा बैठकर
तू ही तो जंगल की लता मंगेशकर

कोयल री कोयल कहने को काली
कहलाती पर बोली से मिसरी बरसाती

कोयल री कोयल रंग तेरा काला
कौन तेरा लगता है काँव-काँव वाला

कोयल री कोयल दूध में नहाले
सच्ची तू परी लगे, पंख जो रंगा ले

जोगेंद्र सिंह सोलंकी, आठवीं, बखतगढ़, धार, म.प्र.। चकमक फ़रवरी, 87 में प्रकाशित।
बिहारीलाल, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.।

ऋचा विवेक

पेड़, आम का

संदीप सरेठा

जहाँ खेत की मेड़
लगा है आम का पेड़
मुझे मत पत्थर मारो
मैं हूँ आम
अरे मैं प्यार की ठौर हूँ

सुगन्ध से इठलाते हैं बौर
कोयल रानी आती है
तुमको गाना सुनाती है
मन लुभाती है मेरी छाँव
फलों को उठती सबकी बाँह!

संदीप सरेठा, खैरवाड़ा, छिंदवाड़ा, म.प्र.। चकमक फरवरी, ४४ में प्रकाशित।
ऋचा विवेक, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.।

गुड़िया का ब्याह

हेमलता परसाई

मम्मी-पापा गए बाज़ार
हम बच्चे थे घर पर चार
फिर शुरू खेल किया हमने
लिया गुड्डे को मुन्नु भैया ने
और गुड़िया को मुन्नी रानी ने

एक दिन मुन्ना-मुन्नी गए बाज़ार
वहाँ हुई दोनों की मुलाकात
हुई वहाँ दोनों की बातें दो-चार
फिर तय हुआ गुड्डा-गुड्डी का ब्याह

गुड्डा-गुड़िया के नए कपड़े आए
खूब मिठाई पकवान बनाए
और सबको निमंत्रण दे आए

एक दिन दुल्हन बनी गुड्डी रानी
लगती सुन्दर-सलोनी जैसे हो परी की रानी
गुड्डा भी होकर तैयार
बनकर राजा घोड़े का सवार

फिर शुरू हुआ कार्यक्रम जयमाला
दोनों ने डाली एक–दूसरे के गले में माला
हम सबने भी खूब नाचा गाया
इस प्रकार हुआ गुड्डा-गुड्डी का ब्याह

तभी आए मम्मी-पापा
घर की दशा देखकर मम्मी बोलीं
कि इतनी देर से कर रहे थे क्या?
हम सब बोले, "गुड्डा-गुड्डी का ब्याह।"

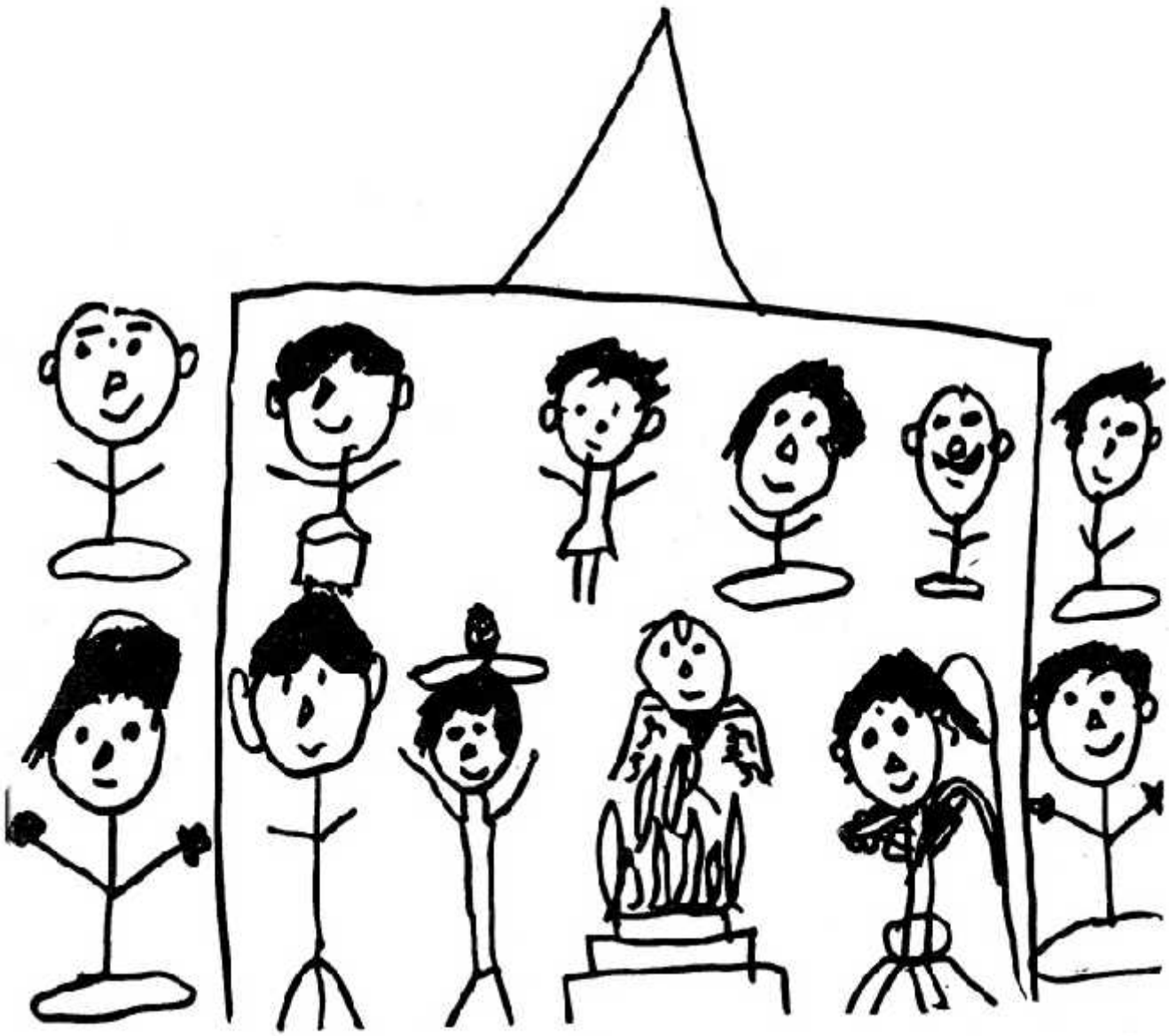

ऋचा विवेक

हेमलता परसाई, आठवीं, सोहागपुर, होशंगाबाद, म.प्र.। चकमक नवम्बर, 85 में प्रकाशित।
ऋचा विवेक, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.।

सुभाष कुमार

विदाई

एम.एस. खान

एक दिन हमारे स्कूल में,
विदाई समारोह पर,
ए.डी.आई.एस. महोदय पधारे,
डटकर भोजन किया,
केवल एक गिलास पानी पिया।
बड़े गुरूजी के कहने पर,
भाषण आरम्भ किया,
"मेरे शिक्षको, बच्चो और बच्चियो,
आज इस विदाई समारोह पर आकर
और मिठाई खाकर
मुझे बड़ी खुशी हुई।
आपके स्कूल में इस प्रकार के कार्यक्रम प्रतिदिन होते रहें
यही शुभकामना है।"
अंत में एक लड़के से बोले, "बेटा पंचमपुरी,
ज़र्दा खिलवाइए।
और जिनकी विदाई है, उनसे मिलवाइए।"

एम.एस. खान, बनखेड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.। चकमक जुलाई, 85 में प्रकाशित।
सुभाष कुमार, सातवीं, पिपरिया, म.प्र.।

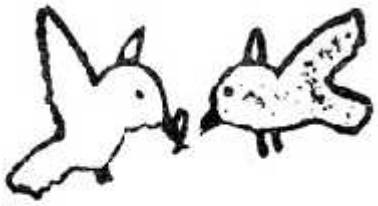

चिड़िया

राजाराम व चंद्रशेखर

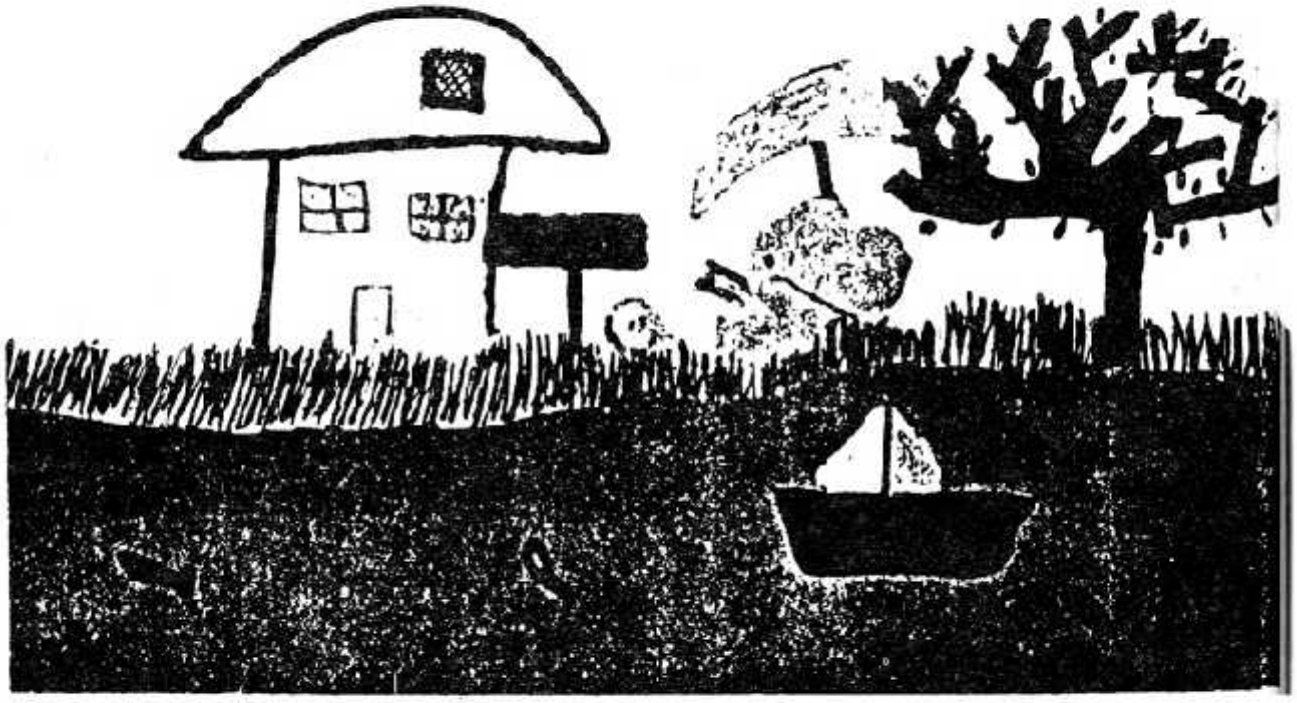

मिरियम रस्सीवाला

यह चिड़िया है
यह पेड़ों पर रहती है
इसके तो घर भी नहीं
घोसलों में यह रहती
भोजन के लिए उसको
खोज करनी पड़ती
इधर-उधर फुदककर
दिन भर उसके बच्चे रोते रहते हैं
जब तक वह बच्चों को छोड़कर
नहीं जाए तो
उसे और उसके बच्चों को
भूखा मरना पड़ता है
यही प्यारी चिड़िया है।

राजाराम व चंद्रशेखर, सातवीं, ढीकल्या, मंदसौर, म.प्र.। चकमक मार्च, 88 में प्रकाशित।
मिरियम रस्सीवाला, दस वर्ष, उज्जैन, म.प्र.। चकमक अगस्त, 85 में प्रकाशित।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इन साधनों में किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा पराशिया (छिंदवाड़ा), हरदा व उज्जैन में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।

ISBN: 81-87171-06-5

मूल्य: 17.00 रुपए